Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वागड़ की संस्कृति और कला : ऐतिहासिक विकास और समकालीन परिप्रेक्ष्य

डॉ. नरेंद्र सिंह राणावत* रश्मि गुप्ता**

* शोध निर्देशक, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** शोधार्थी, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – वागड़ क्षेत्र राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित एक समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक क्षेत्र हैजो मुख्य रूप से बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिलों में विस्तृत है। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट संस्कृति, सांस्कृतिक धरोहर, लोककला, स्थापत्य, संगीत और पारंपरिक रीति-रिवाजों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की संस्कृति का मुख्य आधार भील और मीणा जैसी जनजातियों की परंपराएँ रही हैं जिनका सामाजिक जीवन प्रकृति और धार्मिक आस्थाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। वागड़ का इतिहास और संस्कृति इसे राजस्थान के अन्य क्षेत्रों से भिन्न बनाते हैंक्योंकि यहाँ की परंपराएँ बाहरी प्रभावों और आंतरिक सामाजिक संरचना के मिश्रण से विकसित हुई हैं।

वागड़ का भौगोलिक स्वरूप इसे एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। यह क्षेत्र अरावली पर्वतमाला के दक्षिणी छोर पर स्थित हैजहाँ पहाड़ियाँ, घने जंगल और जलाशय प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। जल संरचनाओं की प्रचुरता के कारण इस क्षेत्र में प्राचीन समय से ही मानव संस्कृतिका विकास हुआ। यहाँ के जनजातीय समुदायों ने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर अपनी विशिष्ट जीवनशैली विकसित कीजो कृषि, पशुपालन, कुटीर उद्योग और कला पर आधारित थी। यहाँ की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराएँ भी प्रकृति से प्रेरित रही हैंजिससे यह क्षेत्र अपने अद्वितीय सांस्कृतिक स्वरूप को बनाए रखने में सक्षम रहा है।

ऐतिहासिक रूप से वागड़ क्षेत्र का उल्लेख विभिन्न प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। महाभारत और पुराणों में इसे 'वाटग्र' या 'वाटग्राम' के नाम से संदर्भित किया गया है। 'प्राकृत भाषा के विद्वान वागड़ शब्द की उत्पत्ति 'बग्गड' शब्द से स्वीकारते हैं लेकिन संस्कृत भाषा परक व्युत्पत्ति को आधार मानकर कुछ विद्वान वागड़ शब्द की उत्पत्ति 'वाग्गर' अथवा 'वार्गवट' से होना बताते हैं।' डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार 'वागड शब्द का अर्थ है- जंगल। उनके अनुसार राजस्थान में दो और गुजरात में एक वागड़ है।' विभिन्न विद्वान वागड़ शब्द को वाग्वर, वागट, वैयागड, वार्गट आदि से संबंधित करते हैं परंतु अधिकांश शिलालेखों और ताम्रपत्रों में वागड़ शब्द का ही प्रयोग मिलला है।

जनजातीय समाज के प्रभाव के कारण यह क्षेत्र बाहरी आक्रमणों से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहालेकिन धीरे-धीरे राजपूत शासकों ने यहाँ अपनी सत्ता स्थापित की। ऐतिहासिक काल में वागड़ क्षेत्र शुंग, क्षत्रप, गुप्त, वर्धन, परमार, चालुक्य और गुहिल राजवंशों के प्रभाव में रहा।परमारों और सोलंकियों के कमजोर पड़ने के बाद गुहिलवंशी सामंतसिंह ने वागड़ में अपने राज्य की स्थापना की। उनके वंशजों के बीच संघर्ष और विभाजन के कारण वागड़ दो भागों में विभाजित हो गया। महारावल उदयसिंह के शासनकाल में इस विभाजन के परिणामस्वरूप डूंगरपुर और बांसवाड़ा नामक दो स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आए।

वागड़ राज्य की स्थापना को लेकर विभिन्न ऐतिहासिक तथ्य और मान्यताएँ उपलब्ध हैं, जो इसकी उत्पत्ति को लेकर अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, रावल वीरसिंहदेव (1278-1303 ई.) ने विक्रम संवत 1339 (1282 ई.) में कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन डूंगरपुर नगर की नींव रखी, जिसे नगर का स्थापना दिवस माना जाता है। बाद में उनके पोते रावल डूंगरसिंह ने वास्तुशास्त्र के अनुसार गढ़ और नगर के विकास कार्य प्रारंभ किए, जिन्हें उनके पुत्र रावल कर्मसिंह (1362-1384 ई.) ने पूर्ण किया।

एक मान्यता के अनुसारबाँसवाड़ा नगर की स्थापना बाँसिया भील ने कीजबकि दूसरी मान्यता में इसे गुहिल वंश से जोड़ा जाता है। अधिकांश इतिहासकार यह मानते हैं कि वागड़ राज्य के वास्तविक संस्थापक गुहिलवंशी सामंतसिंह थेजिन्होंने 1179 ईस्वी के आसपास इस क्षेत्र पर अपना अधिपत्य स्थापित किया। इन विविध मतों और ऐतिहासिक संदर्भों से स्पष्ट होता है कि वागड़ राज्य की स्थापना का इतिहास विभिन्न परंपराओं और दृष्टिकोणों से समृद्ध है।इन राज्यों की स्थापना के साथ ही इस क्षेत्र में किलों, मंदिरों, बावड़ियों और जलाशयों का निर्माण हुआजिससे यहाँ की स्थापत्य कला और धार्मिक परंपराओं को समृद्धि मिली।

प्रस्तुत शोध पत्र में वागड़की संस्कृति एवं कला का ऐतिहासिक विकास और समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

वागड़ की संस्कृति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य- प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक वागड़ की संस्कृति विभिन्न राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से गुजरी हैजिसने इसे अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान दी। इसका भौगोलिक और सांस्कृतिक विस्तार उदयपुर जिले के ऋषभदेव, खेरवाड़ा, खड़ग क्षेत्र (जवासपट्टी, पहाड़ा, मेवल, छप्पन), प्रतापगढ़ जिले, गुजरात के माहीकांठा और रेवाकांठा क्षेत्रों, तथा मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के कुछ भागों तक विस्तृत है।इस क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ माही, सोम, जाखम और अनास हैंजो यहाँ की कृषि और जल आपूर्ति के मुख्य स्रोत हैं।

वागड़ का जनजातीय समाज प्रकृति के साथ गहरे संबंध में रहा हैऔर इसी कारण यहाँ की जीवनशैली, धार्मिक मान्यताएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ

प्राकृतिक तत्वों से प्रेरित रही हैं।वागड़ क्षेत्र मुख्य रूप से भील और मीणा जनजातियों के निवास स्थान के रूप में जाना जाता है। भील समुदाय अपनी साहसी प्रवृत्ति और योद्धा संस्कृति के लिए प्रसिद्ध था। वे जंगलों और पहाड़ियों में रहकर शिकार, खेती और कुटीर उद्योगों में संलग्न रहते थे।मध्यकाल में वागड़ क्षेत्र के राजाओं ने मुगलों और मराठों से कई संघर्ष किए। इसी प्रकार 17वीं और 18वीं शताब्दी में मराठों का प्रभाव बढ़ने से वागड़ के प्रशासन और सांस्कृतिक परंपराओं में भी परिवर्तन देखने को मिला।

ब्रिटिश शासनकाल में वागड़ क्षेत्र के सामाजिक और राजनीतिक ढाँचे में महत्वपूर्ण बदलाव हुए। ब्रिटिश सरकार ने इस क्षेत्र को एक रियासत के रूप में मान्यता दीजहाँ स्थानीय राजाओं को सीमित प्रशासनिक अधिकार प्रदान किए गए। इस दौरान शिक्षा, परिवहन और संचार व्यवस्था में सुधार हुएजिससे इस क्षेत्र में आधुनिकता की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। जनजातीय समाज को औपनिवेशिक प्रशासन के नियमों के अनुरूप ढालने की कोशिशें की गईजिससे उनके पारंपरिक रीति-रिवाजों में परिवर्तन आया। इस काल में जनजातीय आंदोलनों का भी उदय हुआजिसमेंगोविंद गुरु के नेतृत्व मेंभगत आंदोलन सबसे महत्वपूर्ण रहा।

वर्तमान समय में वागड़ की संस्कृति आधुनिकता और परंपरा के संगम का प्रतीक बन रही है। पारंपरिक आदिवासी समाज अपनी मूल सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा हुआ हैलेकिन शिक्षा, संचार और तकनीकी विकास के कारण नए सामाजिक परिवर्तन भी देखने को मिल रहे हैं। वागड़ की ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित करने और इसकी पारंपरिक संस्कृति को आधुनिक समाज से जोड़ने के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। पर्यटन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा दिया जा रहा हैजिससे स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों को प्रोत्साहन मिल रहा हैसाथ ही बाहरी दुनिया को भी वागड़ की समृद्ध संस्कृति से परिचित होने का अवसर मिल रहा है।

वागड़ की कला और संस्कृति – वागड़ क्षेत्र की कला और संस्कृति इसकी ऐतिहासिक विरासत, पारंपरिक मान्यताओं और सामाजिक जीवन से गहराई से जुड़ी हुई है। यहाँ की लोककला, चित्रकला, स्थापत्य, संगीत, नृत्य वर्षों से अपनी पहचान बनाए हुए हैं। वागड़ क्षेत्र में स्थापत्य और मूर्तिकला की एक विशिष्ट और समृद्ध परंपरा रही है। मूर्तिकला या पाषाण कला को वास्तुकला (स्थापत्य) की अनिवार्य सहचरी माना जा सकता है। यहां के राजा-महाराजाओं ने अपने वैभव और कीर्ति को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से राजप्रासाद, मंदिर, बावड़ियाँ तथा अन्य भव्य भवनों (नगर, हवेलियाँ, कोठियाँ) का निर्माण करायाजो स्थापत्य कला के अद्धितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

जहां-जहां मंदिरों का निर्माण हुआ वहीं मूर्तिकला को उसका अभिन्न अंग बनाकर विविध देवी-देवताओं एवं ऐतिहासिक प्रसंगों की शिल्पांकन कला विकसित की गई। इन मंदिरों की दीवारों और स्तंभों पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ तत्कालीन संस्कृति का सजीव प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं। ये मंदिर बाहरी रूप से ऐतिहासिक कलात्मकता को दर्शाते हैंवहीं आंतरिक रूप से आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होकर संतुलित स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करते हैं। वागड़ की स्थापत्य कला में मंदिर, किले, महल और बावड़ियाँ शामिल हैंजो इस क्षेत्र की ऐतिहासिक समृद्धि को दर्शाते हैं।

यहाँ के स्थापत्य को दो भागों धार्मिक एवं लौकिक में विभक्त किया जा सकता है। 'धार्मिक स्थापत्य के अन्तर्गत वे सभी वास्तुकृतियाँ समाहित हैजिनका सीधा सम्बन्ध धार्मिक भावनाओं से है जैसे- यज्ञवेदी, यज्ञशाला, यजमानशाला, यूप, विमान, मन्दिर, प्रतिमा, स्तूप विहार आदि। लौकिक स्थापत्य का सीधा सम्बन्ध मानव के भौतिक विलास से है। गृह, भवन, राजवेश्म तथा विभिन्न शालायें, ग्राम, पुर, नगर, दुर्ग आदि का विन्यास, मनोरंजनात्मक मूर्तियों-खिलौनों आदि का निर्माण, चित्रकला आदि लौकिक स्थापत्य के अन्तर्गत आते हैं।'

धार्मिक स्थापत्य के अन्तर्गत मन्दिर स्थापत्य एवं मूर्तियों का अध्न किया गया है। देवसोमनाथ मंदिर, त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, श्रीनाथजी मंदिर, बेणेश्वर धाम, हजारेश्वर शिव मंदिर, सूर्य मंदिर, जैन मंदिर, गदाधर का जीर्ण मंदिर, सोमेश्वर मंदिर जैसे धार्मिक स्थल वागड़ की स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। लौकिक स्थापत्य में यहाँ के नगर, दुर्ग, भवन, कलात्मक यापियों (बावड़ियों), राज प्रासाद (महल) आदि शामिल है। मंदिरों की भव्यता और शिल्पकला में राजस्थानी और द्रविड़ शैली का मिश्रण देखने को मिलता है।

मुरलीमनोहर मंदिर

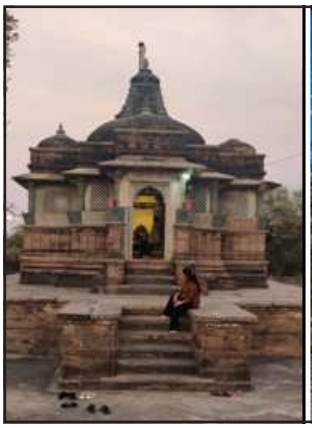

हजारेश्वर शिव मंदिर

देव सोमनाथ

बाँसवाड़ा अंचल में कई धार्मिक स्थल हैं जो अपनी गौरव गाथा सुनाते हैं। यहाँ का खजुराहो-पाराहेड़ा मंदिर, पुष्कर छींच का ब्रह्मा मंदिर, अरथुना (अर्थणा) मंदिर, धार्मिक नगरी तलवाड़ा के मंदिर, त्रिपुरा सुन्दरी का मंदिर आदि पर्यटन व श्रद्धा केन्द्र के रूप में विकसित हैं। बाँसवाड़ा के निकट ठिकरिया गाँव में कलात्मक बावड़ी है। डूंगरपुर का उदय बिलास पैलेस, एक

थम्बा महल, गेप सागर, नव चौकी महल और बांसवाड़ा का महारावल महल, पाराहेडा, अरथूना आदि भी इस क्षेत्र की स्थापत्य विशेषताओं को दर्शाते हैं। राजपूतकालीन किलों और जलाशयों का निर्माण इस क्षेत्र की रणनीतिक महत्ता को भी दर्शाता है। इसके अलावायहाँ की जल संरचनाएँजैसे- माही बाँध और विभिन्न कृत्रिम झीलें स्थापत्य कला की उत्कृष्टता को दर्शाती हैं।

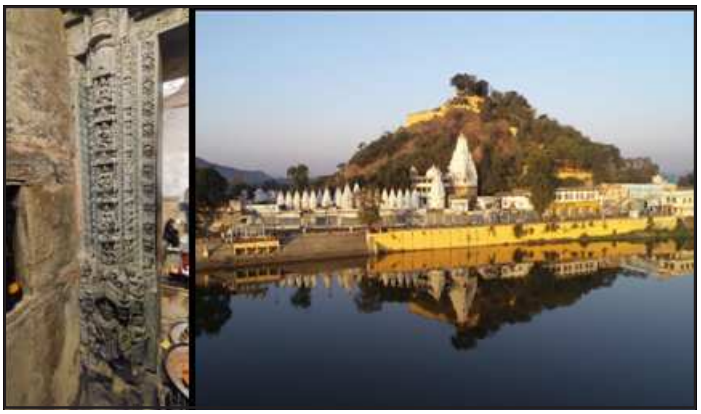

स्थापत्य कला गेप सागर

वागड़ में चित्रकला का विशेष रूप से प्रचलन देखा जा सकता है। संत मावजी कालीन पोथी चित्रों में राजस्थानी अपभ्रंश शैली की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इन चौपड़ों का आकार विशाल है और लिपि व चित्रण की दृष्टि से ये शीघ्रता से निर्मित प्रतीत होते हैं। संपूर्ण चित्रांकन में चित्र संयोजन एवं अंतराल मेवाड़ की चित्र शैली से समानता रखते है तथा इन ग्रंथों का मुख्य चित्रण विषय धार्मिक है। चित्रकारों ने मावजी को श्रीकृष्ण के बाल रूप के समान मानते हुए चित्रित किया है जिसमें कृष्ण की रासलीला, बाल क्रीड़ा, दशावतार एवं निष्कलंकावतार में मावजी का चित्रण किया गया है। देवी-देवताओं, मावजी के माता-पिता, उनके जन्मस्थल साबला और भावपुरी को भी चित्रण का विषय बनाया गया है।

'जयपुर शैली के प्रतिनिधि चित्रों में जिस प्रकार कृष्ण को गोर्वधन धारण करते हुए बनाया गया है उसी प्रकार यहाँ कृष्णावतार में संत मावजी को बनेश्वर धारण किये चित्रित किया है। उनकी शारिरिक बनावट में कोमलता तथा अंग भंगिमा में दृढ़ता दिखाई देती है। यह चित्र शेषपुर मेवाड़ में हरिमंदिर में स्थित महारासलीला ग्रंथ के पृ.सं. 117 पर बना हैं। इन चित्रों का आधार भागवत पुराण माना जाता है। उसी के समान साहित्यों मेंराधा कृष्ण का मोहक स्वरूप, गोपीयों का नृत्य, नौका विहार तथा लताओं, कुजों, वृक्ष के झुरमुट, सघन वन आदि का चित्रण किया गया है। इन चित्रों में नदी, वृक्ष, मछलियाँ, पशु-पक्षी, पुष्प, कमल कुंज, ग्वाले तथा ग्रामीण परिवेश का सुंदर चित्रण तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को दर्शाता है।

वागड़ की संस्कृति में लोकसंगीत, नृत्य, मेले महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ की जनजातियों के पारंपरिक नृत्य और गीत उनके सामाजिक और धार्मिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। गवरी नृत्य, घूमर नृत्य और गैर नृत्य इस क्षेत्र के प्रमुख लोकनृत्य हैंजिनका प्रदर्शन त्योहारों और विशेष अवसरों पर किया जाता है। गवरी नृत्य विशेष रूप से भील समुदाय द्वारा किया जाता हैजिसमें पौराणिक और धार्मिक कथाओं को प्रस्तुत किया जाता है। गैर नृत्य होली के समय किया जाने वाला सामूहिक नृत्य हैजो सामाजिक मेल-मिलाप का प्रतीक है। गैर नृत्य में नर्तक वृत्ताकार रूप में घूमकर लयबद्ध गति से नृत्य करते हैं।

वागड़ के पर्यटन और ऐतिहासिक स्थलों से यहाँ की संस्कृति का सजीव परिचय प्राप्त होता है। यहां के निवासियों के खान-पान, परिधान, जीवनशैली, धार्मिक आस्थाओं, विवाह परंपराओं तथा भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति की झलक मिलती है। विभिन्न कालखंड के धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान और ज्ञान परंपरा का बोध भी होता है। साथ हीग्रामीण और शहरी जीवन की विशिष्टताओं की जानकारी प्राप्त होती है। विभिन्न धर्मों की सांस्कृतिक विविधता और उनके आपसी समन्वय का भी अवलोकन किया जा सकता है।

वागड़ की संस्कृतिऔर कला पर बाहरी प्रभाव – वागड़ की संस्कृतिऔर कला का विकास केवल स्थानीय संस्कृति और परंपराओं तक सीमित नहीं रहाबल्कि विभिन्न बाहरी प्रभावों ने भी इसकी संरचना को प्रभावित किया है। समय-समय पर विभिन्न शासकों, व्यापारियों, उपनिवेशवादियों और आधुनिकता के प्रभावों ने वागड़ की कला और संस्कृति को नए आयाम दिए। इन प्रभावों ने जहाँ इस क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि को और विस्तृत कियावहीं कुछ पारंपरिक कलाओं और परंपराओं को कमजोर भी किया।

वागड़ की प्राचीन कला और संस्कृति मूलत: जनजातीय परंपराओं से प्रभावित रही हैलेकिन मध्यकाल में यहाँ राजपूत शासकों का आगमन हुआजिससे इसकी स्थापत्य कला, संगीत, नृत्य और लोककला में नए तत्व जुड़े। राजपूतों के शासनकाल में मंदिर निर्माण, किलों की स्थापना और सांस्कृतिक आयोजनों में वृद्धि हुई। मंदिरों और महलों की भव्यता में नक्काशी, मूर्तिकला और चित्रकला का उत्कृष्ट प्रदर्शन देखने को मिलता है। डूंगरपुर और बांसवाड़ा के किलों की स्थापत्य शैली इस बात का प्रमाण है कि वागड़ क्षेत्र में राजपूत प्रभाव ने यहाँ की स्थापत्य कला को नया स्वरूप दिया।

ब्रिटिश शासन का वागड़ की संस्कृति और कला पर व्यापक प्रभाव पड़ा। ब्रिटिश औपनिवेशिक व्यवस्था के चलते परंपरागत कला और शिल्प का धीरे-धीरे ह्रास हुआ। आधुनिक शिक्षा प्रणाली और प्रशासनिक सुधारों ने पारंपरिक जीवनशैली को प्रभावित किया। कई शिल्पकारों और कलाकारों को अपनी पारंपरिक कला को छोड़कर नए व्यवसायों की ओर जाना पड़ा। ब्रिटिश शासन के दौरान रेलवे, डाक सेवाएँ और सड़क निर्माण जैसी आधुनिक संरचनाओं का विकास हुआजिससे स्थानीय समाज और संस्कृति में बदलाव आए। इसके साथ हीवागड़ की कला और परंपराओं का दस्तावेजीकरण प्रारंभ हुआजिससे इसकी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने के प्रयास किए गए।

आधुनिकता और वैश्वीकरण ने वागड़ की कला और संस्कृति को कई तरह से प्रभावित किया है। पारंपरिक लोककला, संगीत, नृत्य और हस्तशिल्प की ओर लोगों का झुकाव कम होने लगाऔर युवा पीढ़ी आधुनिक जीवनशैली अपनाने लगी। डिजिटल युग में पारंपरिक कला के स्थान पर नई विधाएँ और शैलियाँ विकसित हो रही हैंजिससे लोककला और शिल्पकारों को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हालाँकिपर्यटन और सांस्कृतिक जागरूकता अभियानों के कारण वागड़ की कला को वैश्विक मंच पर पहचान मिलने लगी है। सरकार और विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों द्वारा इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैंजिससे यहाँ की पारंपरिक कला को पुनर्जीवित किया जा सके।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में वागड़ की कला और संस्कृति – वागड़ क्षेत्र की कला और संस्कृति सदियों से अपने ऐतिहासिक, सामाजिक और धार्मिक महत्व के कारण विशेष स्थान रखती आई है। यह क्षेत्र अपनी पारंपरिक लोककला, स्थापत्य, संगीत, नृत्य के लिए जाना जाता है। समय के साथ

वागड़ की सांस्कृतिक धरोहर पर आधुनिकता, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा हैजिससे यहाँ की पारंपरिक कलाएँ एक नई दिशा में विकसित हो रही हैं। समकालीन संदर्भ में वागड़ की कला और संस्कृति कई नए परिवर्तनों और चुनौतियों का सामना कर रही हैजिनमें पारंपरिक कलाओं का संरक्षण, आधुनिक तकनीकों का समावेश और सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने की आवश्यकता शामिल है।

बेणेश्वर मेला

सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा यहाँ की लोककला, स्थापत्य कला, संगीत, मेलो, रीति-रिवाजों को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं। लोककला और चित्रकला के संरक्षण के लिए कलाकारों को वित्तीय सहायता दी जा रही हैजिससे वे अपनी पारंपरिक शैलियों को जीवित रख सकें। पुराने मंदिरों, किलों और महलों का जीर्णोद्धार किया जा रहा हैजिससे इन धरोहरों को संरक्षित किया जा सके। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ऐतिहासिक स्थलों का विकास किया जा रहा है, जिससे स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ भी मिल सके। त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, श्रीनाथजी मंदिर और बेणेश्वर धाम जैसे धार्मिक स्थलों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया गया हैजिससे श्रद्धालुओं को बेहतर अनुभव मिल सके।

लोकसंगीत, नृत्य और मेले भी समकालीन परिप्रेक्ष्य में बदलाव का सामना कर रहे हैं। पारंपरिक गवरी, घूमर, झूमर, गैर आज भी विशेष अवसरों और त्योहारों पर आयोजित किए जाते हैंलेकिन अब इन्हें मंचीय प्रस्तुतियों और सांस्कृतिक आयोजनों में भी शामिल किया जाने लगा है। युवा कलाकार पारंपरिक धुनों को आधुनिक संगीत से जोड़ रहे हैंजिससे वागड़ का लोकसंगीत नई पीढ़ी को आकर्षित कर रहा है।

निष्कर्ष – वागड़ की संस्कृतिऔर कला का अध्ययन इस क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विशेषताओं को उजागर करता है। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट लोककला, स्थापत्य, संगीत, नृत्य और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, वागड़ की संस्कृतिविभिन्न प्रभावों से गुजरती रही हैजहाँ जनजातीय परंपराओं, राजपूत शासन, मुगल प्रभाव और औपनिवेशिक हस्तक्षेपों ने इसे एक अद्वितीय पहचान दी। वर्तमान में यह क्षेत्र अपनी पारंपरिक धरोहर को सहेजने और आधुनिक समाज में उसके अस्तित्व को बनाए रखने के प्रयास कर रहा है।

वैश्वीकरण, औद्योगीकरण और आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव से पारंपरिक कलाएँ धीरे-धीरे विलुप्ति की ओर बढ़ रही हैं। इस शोध पत्र से यह स्पष्ट होता है कि वागड़ की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना न केवल इस क्षेत्र की पहचान बनाए रखने के लिए आवश्यक हैबल्कि यह भारतीय संस्कृतिकी विविधता को भी बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।पारंपरिक लोककला और चित्रकला के संरक्षण के लिए कलाकारों को आर्थिक सहायता और आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी जानी चाहिए ताकि वे अपनी कला को नए आयाम दे सकें। पिठौरा चित्रकला जैसी लोककलाएँ धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैंजिन्हें पुनर्जीवित करने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी प्रयास आवश्यक हैं।

इन संरचनाओं के संरक्षण और पर्यटन के माध्यम से उनके विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार को ठोस नीतियाँ अपनानी होंगी। वागड़ की हस्तशिल्प और कारीगरी को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएँ चलाई जानी चाहिएंजिससे स्थानीय कारीगरों को आर्थिक लाभ मिल सके और उनकी कला को एक व्यापक बाजार उपलब्ध हो।सरकारी नीतियों, सामाजिक जागरूकता, पर्यटन को बढ़ावा देनेऔर स्थानीय कलाकारों व कारीगरों को आर्थिक सहयोग प्रदान करने के माध्यम से इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मिश्रा वी.सी. : राजस्थान का भूगोल धरातल एंव भू-गर्भिक संरचना, पृ. 21.
2. यादव प्रकाश : वागड़ क्षेत्र के ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल एवं पर्यटन, नवीन शोध संसार (एन इंटरनेशनल रेफरीड पीयर रिव्यू रिसर्च जर्नल), पृ. 457
3. शर्मा, दशरथ : राजस्थान थ्रू द एजेस बीकानेर, भाग 1, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, 2014, पृ. 17
4. महेश पुरोहित (2015), 'डूंगरपुर परिचय व संक्षिप्त इतिहास', अभिरूप प्रिन्टर्स, डूंगरपुर (राजस्थान)।
5. गहलोत जगदीश सिंह : राजपूताने का इतिहास (पहला भाग, दूसरा भाग), हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर, 1994
6. शर्मा गोपीनाथ राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1989
7. ओझा गौरीशंकर ; हीराचन्द : डूंगरपुर राज्य का इतिहास, मुद्रक वैदिक ग्रन्थालय, अजमेर, पृ. 1-81
8. मनीषा चौबीसा : वागड क्षेत्र के प्रमुख लोक साहित्य का सामाजिक, सांस्कृतिक महत्त्व तथा कला सृजन पर प्रभाव, IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSR-JRME) e-ISSN: 2320-7388, p-ISSN: 2320-737X, Volume 5, Issue 1 Ver. III (Jan-Feb. 2015), PP 56-59
9. व्यास राजशेखर : मेवाड़ की कला और स्थापत्य, पृ, 31, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1988
10. रतनलाल मिश्र : स्मारकों का इतिहास एवं स्थापत्य कला, ईना श्री पब्लिशर्स, जयपुर, 1998

****